पूजा पीठिका

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

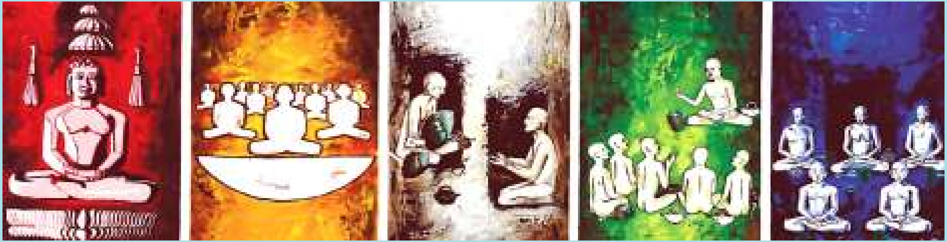

ॐ
जय जय जय!
नमोऽस्तु
नमोऽस्तु
नमोऽस्तु!

अरहंतों को नमस्कार है, सिद्धों को सादर वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार है, उपाध्याय को है वन्दन।।
और लोक के सर्वसाधुओं, को है विनय सहित वन्दन।
पंच परम परमेष्ठी प्रभु को, बार-बार मेरा वन्दन।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

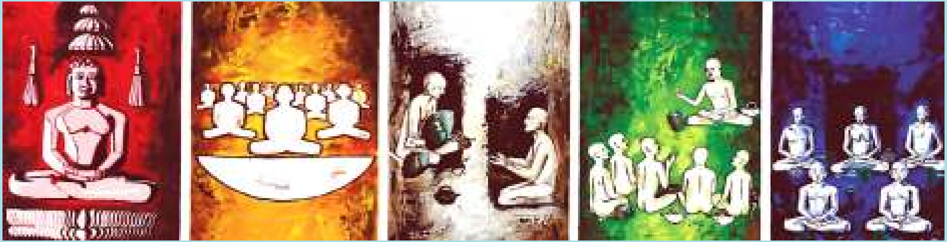

(वीरछन्द)

मंगल चार, चार हैं उत्तम, चार शरण में जाऊँ मैं।
मन-वच-काय त्रियोग पूर्वक, शुद्ध भावना भाऊँ मैं।।
श्री अरहंत देव मंगल हैं, श्री सिद्ध प्रभु हैं मंगल।
श्री साधु मुनि मंगल हैं, है केवलि कथित धर्म मंगल।।

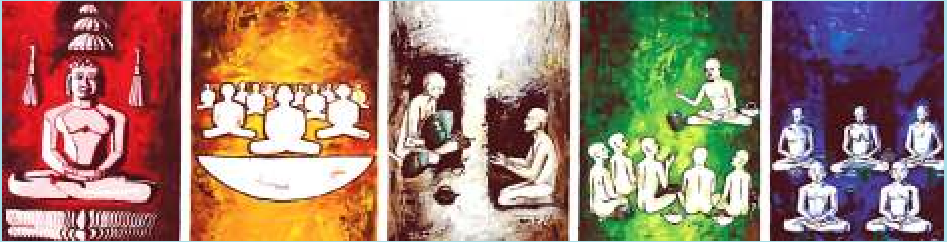

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

श्री अरहंत लोक में उत्तम, सिद्ध लोक में हैं उत्तम।
साधु लोक में उत्तम हैं, है केवलि कथित धर्म उत्तम।।
श्री अरहंत शरण में जाऊँ, सिद्धशरण में मैं जाऊँ।
साधु शरण में जाऊँ, केवलिकथित धर्म शरणा जाऊँ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

मंगल विधान

अपवित्र हो या पवित्र, जो णमोकार को ध्याता है।
चाहे सुस्थित हो या दुस्थित, पाप-मुक्त हो जाता है।।1।।
हो पवित्र-अपवित्र दशा, कैसी भी क्यों नहिं हो जन की।
परमातम का ध्यान किये, हो अन्तर-बाहर शुचि उनकी।।2।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मंगल विधान

है अजेय विघ्नों का हर्ता, णमोकार यह मंत्र महा।
सब मंगल में प्रथम सुमंगल, श्री जिनवर ने एम कहा।।3।।
सब पापों का है क्षयकारक, मंगल में सबसे पहला।
नमस्कार या णमोकार यह, मन्त्र जिनागम में पहला।।4।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मंगल विधान

अर्हं ऐसे परं ब्रह्म–वाचक, अक्षर का ध्यान करूँ।
सिद्धचक्र का सद्‌बीजाक्षर, मन–वच–काय प्रणाम करूँ।।5।।
अष्टकर्म से रहित मुक्ति–लक्ष्मी के घर श्री सिद्ध नमूँ।
सम्यक्त्वादि गुणों से संयुत, तिन्हें ध्यान धर कर्म वमूँ।।6।।
जिनवर की भक्ति से होते, विघ्न समूह अन्त जानो।
भूत शाकिनी सर्प शांत हों, विष निर्विष होता मानो।।7।।

(इति पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

।। जिनसहस्रनाम के लिए अर्घ्य ।।

मैं प्रशस्त मंगल गानों से, युक्त जिनालय माहिं यजूँ।
जल चंदन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ्य सजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्राष्टनामेभ्योऽर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

।। पूजा प्रतिज्ञा पाठ ।।

स्याद्वाद वाणी के नायक, श्री जिन को मैं नमन कराय।
चार अनंत चतुष्टयधारी, तीन जगत के ईश मनाय।।
मूलसंघ के सम्यग्दृष्टि, उनके पुण्य कमावन काज।
करूँ जिनेश्वर की यह पूजा, धन्य भाग्य है मेरा आज।।

।। पूजा प्रतिज्ञा पाठ ।।

तीन लोक के गुरु जिन-पुंगव, महिमा सुन्दर उदित हुई।
सहज प्रकाशमयी दृग्-ज्योति, जग-जन के हित मुदित हुई।।
समवशरण का अद्भुत वैभव, ललित प्रसन्न करी शोभा।
जग-जन का कल्याण करे अरु, क्षेम कुशल हो मन लोभा।।

।। पूजा प्रतिज्ञा पाठ ।।

निर्मल बोध सुधा–सम प्रकटा, स्व–पर विवेक करावनहार।
तीन लोक में प्रथित हुआ जो, वस्तु त्रिजग प्रकटावनहार।।
ऐसा केवलज्ञान करे, कल्याण सभी जगतीतल का।
उसकी पूजा रचूँ आज मैं, कर्म बोझ करने हलका।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

।। पूजा प्रतिज्ञा पाठ ।।

द्रव्यशुद्धि अरु भाव-शुद्धि, दोनों विधि का अवलंबन कर।
करूँ यथार्थ पुरुष की पूजा, मन-वच-तन एकत्रित कर।।
पुरुष-पुराण जिनेश्वर अर्हन्, एकमात्र वस्तु का स्थान।
उसकी केवलज्ञान वह्नि में, करूँ समस्त पुण्य आह्वान।।

ॐ ह्रीं यज्ञविधिप्रतिज्ञायै पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्।

स्वस्ति मंगल पाठ

ऋषभदेव कल्याणकराय, अजित जिनेश्वर निर्मल थाय।
स्वस्ति करें संभव जिनराय, अभिनंदन के पूजों पाय।।
स्वस्ति करें श्री सुमति जिनेश, पद्मप्रभ पद–पद्म विशेष।
श्री सुपार्श्व स्वस्ति के हेतु, चन्द्रप्रभ जन तारन सेतु।।
पुष्पदंत कल्याण सहाय, शीतल शीतलता प्रकटाय।
श्री श्रेयांस स्वस्ति के श्वेत, वासुपूज्य शिवसाधन हेत।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

स्वस्ति मंगल पाठ

भगवान विमलनाथ

भगवान अनन्तनाथ

भगवान धर्मनाथ

भगवान शान्तिनाथ

भगवान कुन्थुनाथ

भगवान अरनाथ

भगवान मल्लिनाथ

भगवान मुनिसुव्रतनाथ

भगवान नमिनाथ

भगवान नेमिनाथ

भगवान पार्श्वनाथ

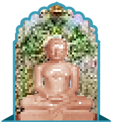

भगवान महावीर

विमलनाथ पद विमल कराय, श्री अनंत आनंद बताय।
धर्मनाथ शिव शम कराय, शांति विश्व में शांति कराय।।
कुंथु और अरजिन सुखरास, शिवमग में मंगलमय आश।
मल्लि और मुनिसुव्रत देव, सकल कर्मक्षय कारण एव।।
श्री नमि और नेमि जिनराज, करें सुमंगलमय सब काज।
पार्श्वनाथ तेवीसम ईश, महावीर वंदों जगदीश।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

स्वस्ति मंगल पाठ

ये सब चौबीसों महाराज, करें भव्यजन मंगल काज।
मैं आयो पूजन के काज, राखो श्री जिन मेरी लाज।।

(इति पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु